आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 2/जून 2026

Received: 14/06/2026; Revised: 16/06/2026; Accepted: 20/06/2026; Published: 28/06/2026

जया जादवानी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना

[1]मनीषा कुमारी

पीएच.डी ,शोधार्थी .हिंदी विभाग

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालयशिमला ,

एवं

[2]डॉ आशुतोष कुमार .

शोध निर्देशक एवं हिंदी के सहायक आचार्य

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय

सांध्यकालीन अध्ययन विभाग, शिमला-171005

tryambakdutt@gmail.com

[1]मनीषा कुमारी, [2]डॉआशुतोष कुमार ., जया जादवानी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 2/जून 2026**,(221 -228)

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

https://doi.org/10.5281/zenodo.21441905

अनुरूपी लेखक : [1]मनीषा कुमारी, पी.एच.डी.शोधार्थी, हिंदी विभाग , हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला

सह लेखक **[2]डॉआशुतोष कुमार .**, शोध निर्देशक एवं हिंदी के सहायक आचार्य, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय , सांध्यकालीन अध्ययन विभाग शिमला

शोध सार

सामाजिक चेतना शब्द 'सामाजिक' और 'चेतना' दो शब्दों के योग से बना है। सामाजिक का संबंध समाज से तथा चेतना का जागरूकता या संवेदना से होता है। इस प्रकार सामाजिक चेतना का अर्थ है समाज

के प्रति उत्तरदायित्व की भावना अथवा जागरूकता की अवस्था। यह एक ऐसी स्थिति है जो व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर समाज के स्तर पर विकास एवं कल्याण की भावनाओं से जोड़ती है। सामाजिक चेतना से जुड़ा व्यक्ति समाज की समस्याओं के प्रति संवेदनशील भूमिका का निर्वहन करता है। सामाजिक चेतना मनुष्य में आपसी सौहार्द की भावना का विकास करती है एवं यह मनुष्य में प्रेम, भाईचारा, एकता आदि गुणों का विकास करती है। इसके अभाव में मनुष्य समाज को विकसित करने तथा मजबूत बनाने में सक्षम नहीं हो पाता। लेखिका जया जादवानी के कथा साहित्य में सामाजिक चेतना का अनेक प्रकार से अंकन किया गया है। इनके साहित्य में मनुष्य केवल अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति न करते हुए, समाज के संदर्भ को देखते हुए संवेदनशीलता की पुष्टि करता है। समाज में होने वाली प्रत्येक अनुभूति को लेखिका अत्यंत जीवंतता के साथ चित्रित करती हैं। अंतर्वस्तु विश्लेषणात्मक शोधप्रविधि पर आधारित - प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य जया जादवानी के कथा साहित्य में अंतर्निहित सामाजिक चेतना की पड़ताल करना है।

बीज शब्द : समाज, चेतना, साहित्य, धर्म, संस्कृति, परंपरा, संघर्ष, एलजीबीटी।

मूल आलेख

मध्यप्रदेश के रीवा में जन्मी जया जादवानी ने स्नातकोत्तर तक की शिक्षा ग्रहण की। इनके माता-पिता पाकिस्तान के सिंध प्रांत के निवासी थे तथा विभाजन के समय उन्हें सिंध छोड़कर भारत आना पड़ा। लेखिका बाल्यावस्था से अध्ययन के प्रति रुचि रखती थी और घर में ही कुछ न कुछ पढ़ती रहती थी। घर में पिता के नाते पढ़नेउसका इन ,लिखने का जो कुछ माहौल था-्होंने बखूबी उपयोग किया। इस विषय में डॉमंजूषा कोल्हे कहती हैं., लेखिका के बचपन में उनके घर" 'हिंद पॉकेट बुक्स' आते थे। वह आठवीं से किताबें पढ़ना शुरू करती हैं। उनके खालीपन को दूर करने का उस वक्त यह एक माध्यम था।"[1] आठवीं कक्षा में लेखिका ने कविताएं लिखना आरंभ कर दिया था। यह लेखन के क्षेत्र में इनका शुरुआती कदम था। धीरे-धीरे इन्होंने अनेक कहानियों, कविताओं एवं उपन्यासों की रचना की। इनके साहित्य में मानव समाज के तमाम पक्षों को चित्रित किया गया तथा सामाजिक भिन्नता व एकता के अनेक रूपों से पाठक को अवगत करवाया गया। समाज के प्रति जागरूकता और संवेदना का भाव इनके साहित्य की मुख्य विशेषता रही। जया जादवानी ने मानव समाज के विभिन्न धर्मों, रीतिरिवाजों-, संस्कृतियों, भौगोलिक भिन्नताओं, खान-पान, रहन-सहन, आर्थिक विषमताओं, राजनीतिक संबंधों को अपने साहित्य के माध्यम से उजागर करने का कार्य किया।

संबद्ध साहित्य का सर्वेक्षण

'स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी महिला नाटककारों के नाटकों में सामाजिक चेतना' केपब्लिकेशन .के., दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक है। इसकी रचयिता श्रीमती विनोद जैन हैं। रचनात्मक साहित्य में सामाजिक चेतना के अंतसूत्रों की पड़ताल के लिए यह पुस्तक उपयोगी है:। सूफिया खान की पुस्तक 'नासिरा शर्मा के उपन्यासों में पुरुष चेतना' लोकहित प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित है तथा यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण

है। यह पुस्तक सामाजिक संघर्षों के यथार्थ एवं पुरुष पात्रों की चेतना, उनकी संवेदनाओं को अभिव्यक्त करती है। विष्णु नागर की पुस्तक 'आदमी और उसका समाज' मनुष्य तथा उसके सामाजिक संबंधों का विवेचन करती है। सामाजिक संरचना, सामाजिक परिवर्तन और मानव की सामाजिक भूमिकाओं को समझने की दृष्टि से यह पुस्तक महत्वपूर्ण है। किताबघर प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। देवेंद्र चौबे की पुस्तक 'समकालीन कहानी का समाजशास्त्र' समकालीन कहानी की विकास यात्रा के साथ समाज के विविध रूपों का वर्णन करती है। इसके माध्यम से इस समय के समाज, संस्कृति, अर्थव्यवस्था, राजनीति एवं सामाजिक संबंधों की सत्यता को समझाने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक को प्रकाशक संस्थान, दिल्ली से प्रकाशित किया गया है तथा यह इस पुस्तक का प्रथम संस्करण है। यह शोधपत्र जया जादवानी के' मिठो पाणी खारो पाणी '(उपन्यास(, 'देह कुठरिया'(उपन्यास) , अनकहा आख्यान(कहानी संग्रह) , उससे पूछो(कहानी संग्रह) , अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता हैकहानी) (संग्रह, मैं अपनी मिट्टी मैं खड़ी हूँ कांधे पर अपना हल लिए(कहानी संग्रह) , ये कथायें सुनाई जाती रहेंगी हमारे बाद भी(कहानी संग्रह) , जया जादवानी, काया कितने दर्द कितनी गांठें(उपन्यास) , खरगोश (उपन्यास), वहाँ मैं हूँपर एकाग्र है (कहानी संग्रह) ।

आकलन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज में रहते हुए उसके मानस पटल पर समाज के प्रति जो जागरूकता या उत्तरदायित्व की भावना विद्यमान होती है वह सामाजिक चेतना कहलाती है। सामाजिक चेतना से जुड़ा संवेदनशील मनुष्य समाज को दिशा और गति प्रदान करता है तथा समाज के विकास में अहम भूमिका निभाता है। समाज में अनेक तत्त्वों के विकास में सामाजिक चेतना का योग होता है। यह समाज में मानवता की भावना, समानता के भाव, नैतिकता और जिम्मेदारी तथा सहयोग एवं सहभागिता जैसे तत्वों के विकास में अग्रणी है। यह समाज में व्याप्त कुरीतियों के खंडन और उनमें सुधार को महत्व देती है। विनोद जैन के अनुसार सामाजिक चेतना शब्द मनोविज्ञान से संबंधित है। वह कहती हैं,सामाजिक " चेतना शब्द का संबंध मनोविज्ञान से है। मनोविज्ञान के अनुसार चेतनमानस की प्रमुख विशेषता चेतना है-, अर्थात वस्तुओं, विषयों, तथा व्यवहारों का ज्ञान।"[2] समाज में रहते हुए समाज तथा समाज के अन्य पक्षों के प्रति संवेदना की भावना मनुष्य को सामाजिक के तौर पर संवेदनशील बनाती है। संवेदना का होना मानव के लिए आवश्यक माना गया है। डॉसूफिया खान के अनुसार.,चेतना व्यक्तित्व की मुख्य विशेषता है। इस " —विशेषता के कारण मानव को सब जीवधारियों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। चेतना का अर्थ हैवस्तुओं, विषयों, व्यवहारों का ज्ञान। चेतना की परिभाषा कठिन है पर इसका वर्णन हो सकता है। चेतना शब्द की भिन्नभिन्न विशेषताएं बताई गयी हैं। लेकिन चेतना शब्द को किसी एक अर्थ में नहीं बांधा जा सकता है। - चेतना निरंतर परिवर्तनशील है। विद्वानों ने आधारभूत शक्ति को चेतना कहा है। गीता में इसे जीवनशक्ति, रसगंगाधर में बुद्धि, रघुवंश में ज्ञान, मेघदूत में संवेदनशीलता, शकुंतला में इसे चित कहा गया है, तो वहीं

कवि भर्तृहरि इसे आत्मा कहते हैं।"[3] चेतना मनुष्य को केवल स्वयं का निर्माण करने के लिए प्रेरित नहीं करती अपितु उसे ग्रहणशील तथा सहृदय बनाती है। विष्णु नागर समाज में विभाजन के स्तर को समझाते हुए कहते हैं, "इस अकल्पनीय रूप से बंटे हुए समाज को जहाँ से देखो, जहाँ से खुरचो, वहाँ दीवारें ही दीवारें हैं, विभाजन ही विभाजन हैं।"[4] मानव समाज में एक ओर जहां चेतना मनुष्य को संवेदनशील बनाती है तो वहीं दूसरी ओर मनुष्य में समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण निर्मित करती है। विस्थापित मनुष्य को हाशिये का समाज नाम से संबोधित करते हुए देवेंद्र चौबे कहते हैं, समाजशास्त्रियों ने" 'हाशिये के लोग' संबंधी अवधारणाओं में हाशिये के चरित्रों की जिन विशेषताओं और समस्याओं का उल्लेख किया है वे काफी महत्वपूर्ण हैं तथा किसी भी ऐसे लोग, समूह या समुदाय का हो सकता है, जो सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक और भौगोलिक कारण से स्थान परिवर्तन करते हैं तथा नई जगह पर व्यवस्थित होने की प्रक्रिया अथवा प्रजातीय संबंधों के कारण संबंधित समाज अथवा समुदाय में एक दोहरी जिंदगी और संस्कृति में जीने के लिए बाध्य हो जाते हैं।"[5] मानव समाज मनुष्य के लिए कभीकभी दुष्कर राहों का - निर्माता बन जाता है जिसके कारण मनुष्य को भिन्न प्रकार की स्थितियों का सामना करना पड़ता है।

जया जादवानी का कथा साहित्य मनुष्य को मानवता एवं समाज के कल्याण के लिए जीवन जीने को प्रेरित करता है। इनके उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से समाज के भीतर के संवेदनशील एवं कटु यथार्थ को उजागर करने का कार्य लेखिका ने किया है। लेखिका अपने उपन्यास 'मिठो पाणी खारो पाणी' के माध्यम से मानव समाज में भारत विभाजन के समय मनुष्य की पीड़ा को अंकित करते हुए कहती हैं,और " फिरने में लाचार बूढ़ों-चलने...सोचो, अपाहिजों और बीमारों का क्या करते ? हर मील पर थकान, भुखमरी, हैजा, और दूसरी बीमारियों का खतरा। हर तरह के लोग थे, जिनमें किसान अधिक थे। हमें उन दिनों मालूम नहीं था कि वायसराय क्या होता है, कांग्रेस और मुस्लिम लीग क्या चीजें हैं जो उस वक्त की भाग्य विधाता हो गई थीं। सबकी किसी तरह बचने और अपने परिवार को बचाने की चिंता हो गई थी।"[6] जिन लोगों को विभाजन के दुष्परिणामों का सामना करना पड़ा उन्हें उनकी स्वयं की, उनके परिवार तथा स्वजनों की अधिक चिंता रही। कुछ बीमार, बुजुर्गों एवं गर्भवती महिलाओं को इसका दंश झेलना पड़ा। दंगों से स्वयं को सुरक्षित रख पाना मनुष्य के लिए किसी बुरे अनुभव से कम नहीं रहा। अपने कहानी संग्रह- 'अनकहा आख्यान' की कहानी 'चिल मार' के माध्यम से लेखिका समाज में पुरानी तथा नई पीढ़ी के मध्य विचारों के टकराव को अभिव्यक्त करती हैं। मिस्टर डागा अपनी पत्नी के साथ अपने नौकरीपेशा बहूबेटे के - पास कुछ दिन व्यतीत करने जाते हैं और वहां का वातावरण देख वे दोनों एहसास करते हैं कि बेटा और बहू उनसे काफी आगे निकल चुके हैं। लेखिका कहती हैं,अभिनय तो मिसेज डागा भी कर रही हैं यह दिखने का " कहीं कुछ गड़बड़ नहीं है पर हकीकत वे भी जानती हैं। उन्होंने इस एक दिन में ही भांप ...कि सब ठीक है लिया कि बच्चे उनसे कितनी दूर चले गए हैं पर कहकर वे खुदको छोटा नहीं करना चाहतीं।"[7] अपने बेटेबहू - से मिलने के बाद दोनों पति-पत्नी अपने संबंधों में अंतर को स्पष्टता से देख पाते हैं, साथ ही उन्हें एहसास होता है कि बच्चों की अपनी भी कोई जिंदगी है। वे जैसे रहना चाहे रहें। अपने कहानी संग्रह-'उससे पूछो' की

कहानी 'सूखे पत्तों का शोर' के माध्यम से वृद्ध पिता के जीवन एवं स्थिति को लेखिका ने उजागर किया है। अपने जीवन में खूब मेहनतकश रहे पिता को अपनी वृद्धावस्था में यही लगता कि इनकी मेहनत के अनुसार उनके बेटे और बहू उन्हें सम्मान नहीं देते तथा अपमानित करते रहते हैं। वे अपनी बेटी से अपनी पीड़ा व्यक्त करते कहते हैं,पार्टीशन ...तेरा फूफा...इसे फेंक आओ कहीं। और वह...सिर्फ बूढ़ा बाप काम नहीं आएगा" मुझे क्या मिला...दे गया दोनों बेटों को सब और मुझे...करवा गया? किया क्या मेरा प्रबंध? मेरे हाथ में क्या है।"[8] पिता को लगता है कि उनके बेटे अपने जीवन में ही व्यस्त हैं उन्हें अपने पिता के बात करने, उनकी देखभाल करने की कोई सुध नहीं है। इसलिए वह अपनी बेटी से अपने मन की व्यथाओं को साझा कर लिया करते। अपने कहानी संग्रह-'अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है' की कहानी 'साक्षी' में वृद्ध सास का व्यवहार पूरे परिवार के लिए असहनीय बन जाता है। बीमारी के चलते उसके शरीर का निचला हिस्सा काम नहीं करता और वह अपना गुस्सा और कड़वा व्यवहार परिवार के प्रत्येक सदस्य पर जाहिर करती रहती है। वह कहती है,मैंने नफरत से जमीन पर थूक दिया। अपने आपको समझती क्या है ये बित्" ते भर की छोकरी। अभी एक साल भी नहीं हुआ शादी को और सास को धमकाती है। मैंने इसीलिए गरीब घर की लड़की चुनी कि मेरी सेवा करेगी, मेरी देखभाल करेगी, पर इसे मेरी शक्ल भी पसंद नहीं।"[9] उमा की सास उसे ही नहीं अपने पूरे परिवार को खूब तंग करती, गालियां देती, खाने-पीने के लिए नखरे करती। उसे लगता उसकी बहू उसकी सेवा के लिए है, जो वह अच्छे से नहीं करती।

लेखिका समाज में फैले अंधविश्वास और पाखंडकी स्थिति को अपने कहानी संग्रह-'मैं अपनी मिट्टी मैं खड़ी हूँ कांधे पर अपना हल लिए' की कहानी 'जो सदियों से चुप हैं' के माध्यम से अभिव्यक्त करती हैं। वह कहती हैं,इस ईदगाह में जो भी सावली आता है" , उन पर जो भी जादू किया जाता है, जमीन या श्मशान में जो भी गाड़ा जाता है, वो सवाली के मुँह से निकलता है। और कभी नीचे के अंगों से साँप, बिच्छू, नींबू, कीलें, ब्लेड, काँच के टुकड़े, श्मशान की हड्डी। एक राजस्थानी के मुँह से दस फुट लंबा साँप निकला था, जो जादू से उसके भीतर उतारा गया था।"[10] अपने कहानी संग्रह-'ये कथायें सुनाई जाती रहेंगी हमारे बाद भी' की कहानी 'फिरफिर लौटेगा-' के माध्यम से लेखिका ने समाज में मनुष्य के ढोंग और आडंबरों को उजागर किया है। परलोक की चाह में मनुष्य किस प्रकार अपने जीवन और कर्तव्यों से विमुख होकर स्वार्थ से लथपथ संन्यास धारण करता है तथा अपने माता-पिता और परिवारजनों को छोड़कर घर त्याग देता है। इस कहानी का पात्र तरुण अपने पिता के देहांत के बाद घर आता है तो उसकी माँ कहती है,जा भाग जा" , एक शापित ज़िन्दगी जिएगा तू —किसी पल तुझे चैन नहीं मिलेगा —जा बियाबानों में घूम और अपनों को तलाश"यही कहता है न तेरा वह लफंगा गुरु।-किसलिए लाया गया है तुझे इस धरती पर-[11] जीवन के वास्तविक संबंधों के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन न करने के कारण तरुण की माँ उससे नाराज़ है और वह उसे कोसती है।

उपन्यास'देह कुठरिया' के माध्यम से लेखिका समाज में एलजीबीटी समुदाय के प्रति संवेदना व्यक्त करती हैं। इस समुदाय की पीड़ा एवं इनके यथार्थ को अभिव्यक्त करते हुए उपन्यास की पात्र विद्या रवि से कहती है, सोच तो सालों से रही थी पर हिम्मत नहीं पड़ती थी कि लोग क्या कहेंगे" ? फिर एक दिन तुम्हारा डर भी निकल जाता है और बचा ही कौन है, जिसे तुम जवाब दो."[12] दिव्या जब रवि से मिलने जाती है तो साड़ी पहने हुए और शृंगार किए होती है। उसे इससे पहले उसके परिवार या समाज से स्वीकृति की आशा थी जो अब वह छोड़ चुकी है और अपने फैसलों के साथ खुश है। अपनी पहचान के लिए उसे अब किसी से न तो स्वीकृति की आशा है न ही वह उन लोगों को अपना मानती है जो उसके संघर्षों में उसके साथ नहीं रहे। जाया जादवानी की कथापात्र काया उपन्यास 'काया कितनी गांठें, कितने दर्द' के माध्यम से कहती हैं, यह क्रूरता हमें इस हद तक क्यों ले आई है कि हम इंसानी मूल्यों की पहचान तक भूल गए हैं" ? क्यों एक इंसान को इंसान की तरह जीने का हक नहीं है ? वह अपने होने पर अपनी मुहर नहीं लगा सकता। वह अपने होने को लेकर भयभीत है, डरा"सहमा भाग रहा है।-[13] काया अपनी वास्तविक पहचान के लिए संघर्ष करती है लेकिन समाज उसे केवल वही जीवन देना चाहता है जो वह दूसरों के लिए सोचता है। लेखिका के उपन्यास 'खरगोश' के माध्यम से उपन्यास की पात्र दिव्या कहती है,शहर हमें भीतर से बदल " देता है डियर, सब सिखा देता है। तुम जैसे माहौल में रहते हो वैसे ही बन जाते हो। मैं न बदलती तो ये सब मिलकर मुझे खा जाते।"[14] गांव से शहर आई काया को दिव्या बताती है कि अपनी परिस्थितियों के अनुसार मनुष्य को स्वयं के स्वभाव में परिवर्तन करना पड़ता है। गांव और शहर की जीवनशैली की भिन्नता मनुष्य को स्वयं के आंतरिक विकास में मदद करती है। लेखिका अपने कहानी संग्रह-'वहाँ मैं हूँ' की कहानी 'कुत्ते मक्खियाँ और तितली' के माध्यम से मानव समाज में संवेदनहीनता के विषय को उजागर करती है। वह कहती हैं, 'मेरा ध्यान उस बकवास पर नहीं था। मैं बहुत साल एक छोटे से शहर और बहुत बड़ी फैमिली में गुजारने के बाद इस बड़े शहर की साफसुथरी पर अजनबी हवा में अभी साल भर पहले ही आई थी। मैंने - सुनाथा बड़े शहर में कोई किसी की जिंदगी में दखल नहीं देता।"[15] मोहिनी बजाज के बारे में मोहल्ले की औरतें अक्सर बातें किया करतीं। कभी उसके पति को शराबी बताया जाता, कभी अच्छा इंसान और मोहिनी को अधिक चंचल। लेकिन धीरेधीरे सबका भ्रम टूट जाता है जब मोहिनी अपने बच्चों को- बेहतर जीवन देने की शुरुआत करती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक चेतना मनुष्य को समाज के प्रति संवेदनशीलता एवं जागरूकता का पाठ पढ़ाती है। इससे जुड़ा मनुष्य समाज के लिए किसी वरदान से कम नहीं है तथा वह अपने व्यक्तित्व के साथ समाज के विकास की राहें तय करता है। वह समाज में एकता, मानवता की भावना, आपसी भाईचारे तथा शिक्षा एवं न्याय जैसे गुणों के विकास को महत्व प्रदान करता है। ऐसा समाज जिसमें मनुष्य अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति के लिए समाज को हानि न पहुंचाकर उसके प्रति संवेदनशीलता का भाव रखता हो, स्वस्थ समाज कहा जाता है। मनुष्य की समाज के प्रति जागरूकता उसे समाज तथा प्रकृति

दोनों के लिए बेहतरीन बनाती है। जया जादवानी के कथा साहित्य में मनुष्य केवल अपने व्यक्तिगत हितों की पूर्ति न करते हुए, समाज के संदर्भ को देखते हुए संवेदनशीलता की पुष्टि करता है।

---

1 डॉ. मंजूषा कोल्हे, जया जादवानी समग्र साहित्य का मूल्यांकन, शुभम पब्लिकेशन, कानपुर, प्रथम संस्करण,2024 , पृ .55

2 श्रीमती विनोद जैन, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दीमहिला नाटककारों के नाटकों में सामाजिक चेतना-, के .के . पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण,2007 , पृ .9

3 डॉसूफिया खान ., नासिरा शर्मा के उपन्यासों में पुरुष चेतना, लोकहित प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण,2016 , पृ .3

4 विष्णु नागर, आदमी और उसका समाज, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ . 76

5 विष्णु नागर, आदमी और उसका समाज, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2006, पृ . 76

6 जया जादवानी, मिठो पाणी खारो पाणी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण2014 , पृ .99

7 जया जादवानी, अनकहा आख्यान, सेतु प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2019, दिल्ली, पृ .84

8 जया जादवानी, उससे पूछो, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ .127

9 जया जादवानी, 'अंदर के पानियों में कोई सपना कांपता है', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002, पृ .61

10 जया जादवानी, मैं अपनी मिट्टी मैं खड़ी हूँ कांधे पर अपना हल लिए, मेघा बुक्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2015, पृ .69

11 जया जादवानी, ये कथायें सुनाई जाती रहेंगी हमारे बाद भी, साहित्य भंडार, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 2015, पृ .53

12 जया जादवानी, देह कुठरिया, सेतु प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2021, पृ .172

13 जया जादवानी, काया कितने दर्द कितनी गांठें, मंजुल पब्लिकेशन हाऊस, उत्तर प्रदेश, प्रथम संस्करण 2025, पृ .129

14 जया जादवानी, खरगोश, प्रतिबिंब प्रकाशन, तमिलनाडु, प्रथम संस्करण,2023 , पृ .36

15 जया जादवानी, वहाँ मैं हूँ, कल्पना किताब प्रकाशन, हरियाणा, प्रथम संस्करण 2018, पृ .60

****